पाठ - 20

एनी बेसेन्ट

जिन विदेशी महिलाओं ने भारत के राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है उनमें एनी बेसेन्ट का स्थान बहुत ऊँचा है। एनी बेसेन्ट जन्म से आयरलैण्ड की थीं पर भारत मंे आकर यहाँ के समाज में घुल-मिलकर पूर्णतः भारतीय बन गयी थीं।

एनी बेसेन्ट का जन्म 1 अक्टूबर सन् 1847 ई0 को लन्दन में हुआ था। उनकी माता आयरलैण्ड की थीं और पिता इंग्लैण्ड के रहने वाले थे। बचपन में एनी बेसेन्ट को आयरिश भाषा और आयरिश रहन-सहन बहुत प्रिय थे। जब एनी बेसेन्ट पाँच वर्ष की थीं तभी उनके पिता का देहान्त हो गया।

पिता की मृत्यु के बाद एनी बेसेन्ट की माता को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वे एक होटल चलाती थीं और उसी की आमदनी से अपनी पुत्री को हैरो में शिक्षा दिला रही थीं।

एनी बेसेन्ट स्वतंत्र विचारक थीं। अपने पादरी पति फ्रैंक बेसेन्ट के सम्पर्क मंे आते ही उनके मन में ईसाई धर्म के उपदेशों के विषय में शंकाएँ उत्पन्न होने लगीं। दाम्पत्य जीवन

अधिक सुखमय नहीं था फिर भी एनी बेसेन्ट अपने कत्र्तव्य का पालन करती रहीं। उन्होंने एक पुत्र और एक कन्या को जन्म दिया। वे बड़ी रुचि और उत्साह से बच्चों के पालन-पोषण मंे लग गईं। एक बार उनके दोनों बच्चे बीमार पड़ गए। वे दिन-रात उनकी सेवा में लगी रहती थीं। बच्चे तो किसी प्रकार स्वस्थ हो गए पर उनका अपना स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया और उनको जबर्दस्त मानसिक संघर्ष का सामना करना पड़ा।

सन् 1875 ई0 में थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना हुई। एनी बेसेन्ट उसकी सदस्या बन गईं और आध्यात्मवाद के प्रचार के लिए अपने जीवन को अर्पित कर दिया। इस सोसाइटी के तीन प्रमुख उद्देश्य थे जिनके कारण एनी बेसेन्ट इस सोसाइटी में शामिल हुईं-

(1) जाति या धर्म का भेद-भाव किए बिना विश्व बन्धुत्व की स्थापना करना। (2) आर्य साहित्य और दर्शन के अध्ययन को आगे बढ़ाना। (3) प्रकृति के नियमों तथा मनुष्य मंे छिपी किंतु सम्भव भौतिक शक्तियों की खोज-बीन करना। सन् 1893 ई0 में शिकागो में होने वाले सर्वधर्म सम्मेलन मंे एनी बेसेन्ट ने थियोसोफिकल सोसाइटी का प्रतिनिधित्व किया। जब वे थियोसोफिकल सोसाइटी के भारतीय सदस्यों के सम्पर्क में आयीं तब उन्होंने उनसे वादा किया कि वे भारत अवश्य आयेंगी।

46 वर्ष की उम्र में एनी बेसेन्ट भारत आयीं और फिर भारत की बनकर भारत में रह गईं। उन्होंने भारत की सामाजिक और धार्मिक स्थिति का गहन अध्ययन किया। उन्होंने अनुभव किया कि भारत के विद्यालयों के पाठ्यक्रम मंे धार्मिक और नैतिक शिक्षा को भी सम्मिलित करने की आवश्यकता है। वे भारत के विद्वानों, विचारकों, धर्म-गुरुओं और समाज सुधारकों के सम्पर्क में आयीं तथा उनके साथ विचार-विमर्श किया। अडयार (तमिलनाडु), वाराणसी, मुम्बई, आगरा, लाहौर आदि स्थानों में जाकर उन्होनंे भाषण दिए। शिक्षा के प्रचार-प्रसार और शिक्षा प्रणाली में सुधार पर उनके भाषणों में विशेष बल रहता था। उन्होंने पिछड़ी जातियों के लिए स्कूल खुलवाने के प्रयत्न आरंभ किए और इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा के अभियान में जुट गईं।

सन् 1907 ई0 मंे एनी बेसेन्ट थियोसोफिकल सोसाइटी की अध्यक्षा बन गईं। अपने विचारों और सिद्धान्तों के प्रचार के लिए उन्होंने दो समाचार पत्रों का प्रकाशन आरंभ कराया। एक था ‘‘द कामन वील’’ और दूसरा था ‘‘न्यू इण्डिया’’। इन समाचार पत्रों के माध्यम से उनके विचार जनता तक पहुँचने लगे।

एनी बेसेन्ट प्रभावशाली वक्ता, श्रेष्ठ लेखिका एवं सफल प्रचारक थीं। उन्होंने धर्म-शास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति और शिक्षा पर अनेक ग्रन्थों की रचना की। इन रचनाओं में उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्राचीन गौरव का गुणगान किया है तथा राष्ट्रवाद को भी धर्म के मार्ग में ले जाने की प्रेरणा दी। उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता का अनुवाद किया और ''हन्ट्स आन द स्टडी आफ भगवद्गीता'' नामक पुस्तक की रचना की। इस ग्रन्थ से पता चलता है कि वे गीता के ज्ञान योग, कर्मयोग, शक्तियोग और इन्द्रिय निग्रह की साधना को स्वीकार करती थीं।

एनी बेसेन्ट व्यक्ति की स्वतंत्रता की हिमायती थीं। उनका कहना था कि व्यक्ति को अपने चिन्तन के परिणामों को स्वतंत्रता से व्यक्त करने का अधिकार होना चाहिए। सत्य का आचरण करके ही हम स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। वे भारत को समृद्ध राष्ट्र के रूप मंे देखना चाहती थीं। उनके मन में भारत के प्रति गहरा लगाव था। अपनी एक कविता में वे भारत के सम्बन्ध में कहती हैं-

हे पूर्ण राष्ट्र भारत! भविष्य के भारत!

कितनी देर बाद तुम अपना पद प्राप्त करोगे ?

कितनी देर बाद तुम्हारे निवासी स्वतंत्र जीवन बिताएंगे ?

कब तुम्हारी आत्मा अनन्त को समेट कर उसमंे लीन हो जायेगी ?

एनी बेसेन्ट अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महिला थीं। उनके अन्दर न्याय और सत्य के लिए संघर्ष करने वाली सशक्त आत्मा विद्यमान थी। जिस समय भारत ने स्वराज्य के लिए संघर्ष आरंभ किया उस समय अनेक ऐसी शक्तियाँ थीं जो भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप मंे नहीं स्वीकार करना चाहती थीं। एनी बेसेन्ट ने धर्म और अध्यात्म का मार्ग अपनाकर भारतीय राष्ट्रवाद की शक्ति बढ़ायी। उन्होंने स्वराज्य के आदर्श को भारत में लोकप्रिय बनाने का सराहनीय प्रयास किया। लोकहित को ही वह राज्य और राष्ट्र का लक्ष्य मानकर चलीं। वे सन् 1917 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष भी बनीं। उनके सम्बन्ध मंें हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने कहा था-

''आज की पीढ़ी के लिए वह नाममात्र हो सकती हैं लेकिन मेरी और मेरे से पहले की पीढ़ी के लिए उनका बहुत बड़ा व्यक्तित्व था जिसने हम लोगों को बहुत प्रभावित किया। इसमें कोई शक नहीं हो सकता कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान बहुत

अधिक था। इसके अतिरिक्त वह उन लोगों में से थीं जिन्होंने हमारा ध्यान हमारी अपनी सांस्कृतिक धरोहर की ओर आकर्षित किया और हममें उसके प्रति गर्व पैदा किया।''

अभ्यास

1. एनी बेसेन्ट का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

2. एनी बेसेन्ट को बचपन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?

3. एनी बेसेन्ट ने जनता की भलाई के लिए कौन-कौन से कार्य किए ?

4. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एनी बेसेन्ट के योगदान के बारे में लिखिए ?

5. सही विकल्प चुनिए-

एनी बेसेन्ट भारतीय राष्ट्रीय कांगे्रस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनीं-

(क) 1907 में (ख) 1911 में

(ग) 1917 में (घ) 1927 में